

विचार बिन्दु

फल की इच्छा छोड़कर निरंतर कतव्य करो। जो फल की अभिलाषा छोड़कर कतव्य करते हैं, उन्हें अवश्य मोक्ष प्राप्त होता है। –गीता

मोदी ने अपने कार्यकाल के 11 वर्ष पूरे किए

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने कार्यकाल के ग्यारह वर्ष पूरे कर लिए हैं। इस अवधि में मोदी सरकार ने कई ऐतिहासिक फैसले लिए जिनकी देश और दुनिया में काफी चर्चा हुई। मोदी ने 26 मई 2014 को भारत के प्रधानमंत्री पद की शपथ ली और वे भारत के प्रथम प्रधानमंत्री हैं जिनका जन्म आजादी के बाद हुआ है। ग्यारह साल बाद भी मोदी की लोकप्रियता लगातार बनी हुई है। मोदी ने देश के सबसे लंबे समय तक लगातार शासन करने वाले गैर-कांग्रेसी प्रधानमंत्री होने का रिकॉर्ड भी अपने नाम कर लिया है। मुख्यमंत्री से प्रधानमंत्री तक 25 साल का बेमिसाल सफर पूरा करने वाली यह शख्सियत नरेन्द्र दामोदर दास मोदी आज ग्लोबल लीडर के रूप में अपनी पहचान कायम करने में सफल हुए हैं। मोदी में गजब का आत्मविश्वास है। प्रखर और कुशल वक्ता के रूप में उनकी राष्ट्रीय पहचान है।

मोदी की कार्यशैली, सोच, साहस, हौसला, कार्य निष्ठा, देश के प्रति समर्पण, त्वरित निर्णय लेने की क्षमता, नेतुत्व और कुछ कर गुजरने की ललक ने उनकी लोकप्रियता को देश ही नहीं अपितु दुनिया में भी बढ़ाने का काम किया है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक मोदी की इन 11 सालों की उपलब्धियां बेमिसाल रही है। इन 11 सालों में मोदी सरकार ने अनेक क्षेत्रों में सफलता के परचम फहराए इसमें कोई दो राय नहीं है। मोदी सरकार के कार्यकाल में विपरीत स्थितियों के बावजूद भारत ने विश्व आर्थिक क्रांति का उद्घोष कर विकास के प्रेरक के रूप में अपना स्थान सुरक्षित किया है। इस अवधि में देश के बुनियादी ढांचा क्षेत्र में सबसे अधिक सार्वजनिक निवेश हुआ है। परिणाम स्वरुप अनेक क्षेत्रों में आशातीत प्रगति कर भारत विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक बनने की ओर अग्रसर है। मोदी ने कश्मीर में एक ध्वज, एक निशान और एक संविधान का जनसंघ के पितृ पुरुष का सपना साकार किया। मोदी ने अनेक ऐतिहासिक कार्यों को अंजाम देकर ‘मोदी है तो मुमकिन है’ की अपनी छवि बनाई।

मोदी संघ के एक विनम्र स्वयं सेवक की तरह देश की नब्ज को पहचानने में सफल हुए। इस अवधि में मोदी सरकार की सबसे बड़ी उपलब्धि ये रही कि सरकार के किसी मंत्री पर कोई भी भ्रष्टाचार या घोटाले का आरोप नहीं लगा।

मोदी में गजब का आत्मविश्वास है। प्रखर और कुशल वक्ता के रूप में उनकी राष्ट्रीय पहचान है। मोदी की कार्यशैली, सोच, साहस, हौसला, कार्य निष्ठा, देश के प्रति समर्पण, त्वरित निर्णय लेने की क्षमता, नेतृत्व और कुछ कर गुजरने की ललक ने उनकी लोकप्रियता को देश ही नहीं अपितु दुनिया में भी बढ़ाने का काम किया है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक मोदी की इन 11 सालों की उपलब्धियां बेमिसाल रही हैं।

मिशन, जीएसटी, आयुष्मान भारत योजना, डिजिटल इंडिया, इंफ्रास्ट्रक्चर, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान, आत्मनिर्भर भारत अभियान, अनुच्छेद 370 हटाना, राम मंदिर निर्माण, नारी शक्ति और कानून, तीन तलाक कानून, रक्षा और सुरक्षा, शिक्षा और कौशल विकास,महिलाओं के लिए सैन्य सेवा में प्रवेश और बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ सहित 80 करोड़ गरीबों को रोजी-रोटी की सुविधा उपलब्ध कराकर मोदी सरकार की ग्यारह सालों की प्रमुख उपलब्धियां हैं। हाल ही ऑपरेशन सिन्दूर के माध्यम से पाकिस्तान में चल रहे आतंकी अड्डों को ध्वस्त करने में सफलता हासिल की। इस अवधि में बढती कीमती (खासतौर पर पेट्रोल-डीजल), किसानों के आंदोलन, बेरोजगारी, नोटबंदी, जीएसटी आदि की नाराजगी के बावजूद लोगों पर अभी भी मोदी का जादू बरकरार है।

मोदी सरकार के 11 साल के कार्यकाल दौरान उनके विरोधियों में उनके प्रति बेहद नाराजगी का भाव है। इसके बावजूद लोगों का मानना है भ्रष्टाचार को काबू करने का मोदी ने ईमानदारी से प्रयास किया है जिसकी वजह से सरकारी मदद का लाभ जरूरतमंद गरीबों और असहाय लोगों तक पहुंचा है। इन 11 सालों में मोदी सरकार ने अनेक क्षेत्रों में सफलता के परचम फहराए इसमें कोई दो राय नहीं है। इस अवधि में मोदी सरकार की सबसे बड़ी उपलब्धि ये रही कि ध्वस्त करने में सफलता हासिल की। इस अवधि में बढती कीमती (खासतौर पर पेट्रोल-डीजल), किसानों के आंदोलन, बेरोजगारी, नोटबंदी, जीएसटी आदि की नाराजगी के बावजूद लोगों पर अभी भी मोदी का जादू बरकरार है।

–अतिथि सम्पादक, बाल मुकुन्द ओझा, वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार



पंडित अनिल शर्मा

राशिफल गुरुवार 29 मई, 2025

ज्येष्ठ मास, शुक्ल पक्ष, तृतीया तिथि, गुरुवार, विक्रम संवत 2082, आर्द्रा नक्षत्र रात्रि 10:39 तक, शूल योगदिन 3:47 तक, तैत्तिल करण दिन 12:26 तक, चन्द्रमा आय मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृष, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-कर्क, बुध-वृष, गुरू-मिथुन, शुक्र-मीन, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में। आज सर्वार्थ सिद्धि योग, रवियोग रात्रि 10:39 से आरम्भ होगा। आज महाराणा प्रताप जयन्ती है। आज जिलाहज मु.मास 12 आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:19 तक, चर 10:42 से 12:24 तक, लाभ अमृत 12:24 से 3:47 तक, शुभ 5:29 से सूर्यास्त तक। राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 5:38, सूर्यास्त 7:10

	मेघ परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में अनावश्यक वाद-विवाद हो सकते हैं।
	सिंह आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। संभावित स्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। पारिवारिक यात्रा संभव है।
	धनु परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। आपसी सहयोग सम्न्वय से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

	वृष व्यावसायिक आर्थिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटक हुआ धन प्राप्त होगा।
	कन्या व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिल सकती है। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।
	मकर व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता केलिएदिन अच्छा रहेगा। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

	मिथुन व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेंगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।
	तुला नवीन कार्यों के संबंध में सकायात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटक हुए कार्य बनने लंगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लंगेंगी।
	कुंभ व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। अटक हुए कार्य बनने लंगेंगे। नौकरपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ से राहत मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

	कर्क घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक व्यक्तितग कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी और मन में असंतोष बना रहेगा। स्वभाव की तेजी पर नियंत्रण रखें।
	वृश्चिक चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नही है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।
	मीन घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

संपादकीय

महाराणा प्रतापः स्वधर्म एवं स्वदेश के लिए आजीवन संघर्षरत सेनानी



राजेश्वर सिंह

भारतीय संस्कृति व परम्परा में धर्म को मनुष्य के सहज कर्तव्य के रूप में परिभाषित किया गया है और धैर्य, क्षमा, संयम, अस्तेय, स्वच्छता, इन्द्रिय संयम, बुद्धि, विद्या, सत्य और अक्रोध इसके दस लक्षण बताये गये हैं। भारत में सभ्यता के आदिकाल से ही मनुष्य का व्यक्तितगत व सामाजिक जीवन उपर्युक्त महान मानवीय मूल्यों पर आधारित दस लक्षण धर्म के मूलाधार पर प्रतिष्ठित था। भारतीय भूभाग के विपुल विस्तार व आवागमन के त्वरित साधनों के अभाव की वजह से यह एकाम्त सांस्कृतिक क्षेत्र विभिन्न राज्यों अथवा राजनीतिक इकाइयों में विभक्त था किन्तु वहाँ भी व्यक्तिगत जीवन, सामाजिक व्यवस्था व राज व्यवस्था का आधार दस लक्षण धर्म ही था।

विदेशी आक्रान्ताओं के भारत पर आक्रमण का मूल उद्देश्य न केवल इस विस्तृत भूभाग की विपुल धन सम्पदा

का दोहन था वरन् अपना राज्य स्थापित कर यहाँ के धर्म, संस्कृति, परम्परा व आधारभूत जीवन मूल्यों को ध्वस्त कर जनसामान्य में दास मनोवृत्ति को अधिरोपित करना था ताकि उनका आधिपत्य निष्कटक हो सके। आक्रान्ता व उनके वंशज इस उद्देश्य की प्राप्ति में आंशिक रूप से सफल अवश्य हुए क्योंकि भारतीय समाज में गुण –कर्म आधारित गतिशील वर्ण व्यवस्था कालक्रम में वंशानुगत अपरिवर्तनीय जाति व्यवस्था में तब्दील हो चुकी थी और अस्पृश्यता तथा जातिगत भेदभाव यहाँ की सामाजिक व्यवस्था का अंग बन चुका था, जिससे पंडित एक छोटे से वर्ग ने लाभ, लोभ या आतंक की वजह से धर्म परिवर्तन अवशय किया किन्तु व्यापक जन समुदाय की धर्मनिष्ठा अटूट और अपरिवर्तनीय ही रही। इसके महेश्वर विदेशी मूल के शासक ने अपनी रणनीति में बदलाव किया व स्थानीय शासकों के साथ सहअस्तित्व, सहयोग व समायोजन की नीति का अवलम्बन किया। यह नीति ऊपर से तो अत्यन्त सहिष्णु, समावेशी व उदारवादी प्रतीत होती थी किन्तु अन्दर से आक्रांताओं के मूलभूत उद्देश्य अपरिवर्तनीय ही रहे।

राजपुताना के राज्यों में केवल मेवाड़ ही एकमात्र ऐसा राज्य था जिसने मुगल साम्राज्य का अंग बनने से स्पष्ट रूप से इंकार किया जिसका खामियाजा वहाँ के शासकों व जन साधारण को भुगतान पड़ा। 1567 ई. में अकबर ने जब चित्तौड़ पर चढाई की ,उस समय

अपने सरदारों एवं सेनानायकों की सलाह पर महाराणा उदय सिंह ने चित्तौड़ का गढ छोड़ दिया। 23 फरवरी 1568 ई. की रात्रि में चित्तौड़ का अन्तिम जोहर हुआ तथा दूसरे दिन दुर्गद्वार खोलकर योद्धाओं ने साका किया। इसके साथ ही अकबर का चित्तौड़ पर अधिकार हो गया। कुछ समय तक दुर्गम पहाड़ों एवं कुम्भलमेर में रहेगे राजा मेवाड़ उदय सिंह ने गोगुन्दा में अपना स्थान कायम किया और वहाँ पर 28 फरवरी, 1572 को उन का देहान्त हुआ। अपनी मृत्यु के कुछ दिवस पूर्व ही महाराणा उदय सिंह ने राजगढ़ी पर प्रताप के औचित्त्वपूर्ण दावे की उपेक्षा कर अपने कनिष्ठ पुत्र जगमाल को युवराज व राज्य का भावी उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था किन्तु मेवाड़ के सरदारों के प्रभावी हस्तक्षेप के कारण 28 फरवरी, 1572 को ही प्रताप का मेवाड़ की राजगढ़ी पर राज्याभिषेक सम्पन्न हुआ। यह घटनाक्रम स्पष्ट रूप से इस तथ्य का द्योतक है कि राजा में देवत्व के निहित होने की अवधारणा के बावजूद सामन्तों में सत्य, न्याय और औचित्य के प्रति निष्ठा थी व गलत राजाज्ञा को अस्वीकार करने का साहस भी था।

प्रताप की गद्दीनशीनी के एक वर्ष पश्चात अप्रैल, 1573 में आमेर के कुंवर मान सिंह कच्छवाह, सितम्बर, 1573 में आमेर के राजा भगवंतदास तथा दिसम्बर, 1573 में राजा टोडरमल अकबर के दूत के रूप में प्रताप से मिले व उन्हें मुगल सम्राट की अधीनता स्वीकार करने हेतु सहमत करने का

प्रयास किया किन्तु यह प्रयास निष्फल ही रहा। अन्ततः 18 जून, 1576 को प्रताप व मुगल सेनाओं के बीच हल्दी घाटी का सुप्रसिद्ध युद्ध हुआ जिससे मेवाड़ के प्रमुख योद्धा रामदास मेड़तिरा, रामशाह तंवर, झाला बीदा, झाला मानसिंह, रावत नैतसी इत्यादि वीरता पूर्वक लड़ते हुए काम आए और प्रताप तथा उनके बचे हुए सैनिकों को रणभूमि छोड़नी पड़ी। यद्यपि विजय मुगल सेना की हुई किन्तु वे प्रताप को पकड़ने अथवा उनका मनोबल तोड़ने में असमर्थ रहे। इसके बाद अक्टूबर, 1576 में अकबर ने स्वयम् तथा अक्टूबर, 1577, दिसंबर, 1578 तथा नवंबर 1579 में मुगल सेनापति शहाबाज खां ने लगातार मेवाड़ पर आक्रमण किए किन्तु प्रताप को गिरफ्तार करने अथवा मेवाड़ पर पूर्ण अधिकार करने में पूर्णतया विफल रहे।

अक्टूबर, 1582 में विजयादशमी के दिन प्रताप ने कुंभलमेर से 40 किमी उत्तरपूर्व में दिवरे गांव के शाही धाने पर आक्रमण किया। मुगल सेना का नेतृत्व सुल्तान खां के हाथ में था। इस युद्ध में प्रताप की विजय हुई और राजपूत सेना ने मुगलों को अजमेर तक खदेड़ा। दिवरे के युद्ध ने मुगलों के मनोबल को बुरी तरह तोड़ दिया। इसके उपरान्त प्रताप ने गोगुन्दा, कुम्भलगढ़, सवाई, चावण्ड, जाण्डा, मरारिया तथा माण्डलगढ़ जैसे महत्वपूर्ण ठिकानों पर कब्जा कर लिया।

19 जनवरी, 1597 को अपनी मृत्यु से पूर्व प्रताप ने चित्तौड़गढ़ को छोड़कर मेवाड़ के लगभग सम्पूर्ण

भूभाग पर अधिकार कर लिया था। चित्तौड़गढ़ दुर्ग पर वापस अधिकार करने की उनकी उत्कट अभिलाषा थी और इस कार्य की सिद्धि तक उन्होंने पत्तल में भोजन करने व तृणशय्या पर शयन करने का दुस्साध्य प्रण लिया था, जिसे जीवन के अन्त तक निभाया।

यह संघर्ष गाथा उस अप्रतिम महावीर की है जो चाहता तो अन्य राजाओं की तरह अकबर की अधीनता स्वीकार कर सुख, साधन ,समुद्धि और सुविधा से युक्त वैभवशाली जीवन जी सकता था, किन्तु अपने धर्म, संस्कृति, परम्परा, पूर्वजों के जीवन मूल्यों एवं स्वदेश की रक्षा के लिये उन्होंने आजीवन संघर्ष के कष्टकाकीर्ण पथ का चरण किया और लाख कठिनाइयों आने के बावजूद अपने स्वातन्त्र्य व स्वाभिमान पर आंच नहीं आने दी। इस संघर्ष में उनके साथी और सहभागी केवल राजपूत और भील ही नहीं थे, ब्राह्मण, ओसवाल, चारण और पठान आदि समुदायों ने भी तन, मन और धन से महाराणा को सहयोग दिया व आजीवन उनके मनोबल को ऊंचा बनाए रखा। यह इस बात का प्रमाण है कि नायक में अगर बुद्धिमता, संकल्पशक्ति, साहस, सबको साथ लेकर चलने की क्षमता, धैर्य, विमर्षता, आत्मबल और दृढ़ निश्चय हो तो जन साधारण में भी उत्साह, ध्येयनिष्ठा, एकात्मता, सहयोग व समर्पण का भाव जागृत होना स्वाभाविक है।

–राजेश्वर सिंह, आई.ए.एस. (सेवानिवृत्त)

भारत विश्व की चौथी अर्थव्यवस्था : उपलब्धि तो है, लेकिन सफर लम्बा है



राजेन्द्र मोहन शर्मा

भारत की अर्थव्यवस्था ने हाल के वर्षों में वैश्विक मंच पर उल्लेखनीय प्रगति की है। 2025 में भारत की सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) 4.3 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच चुकी है, जिसके साथ यह विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गई है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के अनुसार, भारत ने जापान को पीछे छोड़ दिया है। इस आर्थिक प्रगति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा वित्तीय समावेशन रहा है, जिसने समाज के हर वर्ग, खास तौर पर ग्रामीण और निम्न आय वर्ग को बैंकिंग, ऋण और डिजिटल भुगतान जैसी सेवाओं से जोड़ा है। हालांकि, भारत की यह चमकती आर्थिक तस्वीर पूरी तरह सच नहीं है। आंकड़ों की बाजीगरी, संचनान्त्वक कमियाँ और सामाजिक चुनौतियाँ इस कहानी को “आधी हकीकत, आधे फसाने” के रूप में देखती हैं।

भारत की आर्थिक प्रगति का आधार 1991 के उदारीकरण सुधारों में निहित है, जिसने वैश्विक व्यापार के दरवाजे खोले। 2015 में भारत की जीडीपी 2.1 ट्रिलियन डॉलर थी, जो 2025 तक 4.3 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच गई, यानी 105% की वृद्धि। यह वैश्विक औसत 3.9% से कहीं अधिक है। 2022 में भारत ने यूनाइटेड किंगडम को पछाड़कर पांचवां स्थान हासिल किया और अब जापान को पीछे छोड़ कर अग्रसर है। निर्धन क्षेत्र में भी भारत ने मजबूत प्रदर्शन किया। 2021-22 में वस्तुओं और सेवाओं का निर्यात 650 बिलियन डॉलर को पार कर गया, और 2023-24 में इसके 1 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंचने की संभावना है। सूचना प्रौद्योगिकी, फार्मास्यूटिकल्स और व्यावसायिक सेवाओं में भारत की वैश्विक पहचान

बनी है। मेक इन इंडिया और स्टार्टअप इंडिया जैसी पहलों ने विनिर्माण और नविकार को बढ़ावा दिया, जिसके परिणामस्वरूप दर्जनों यूनिकॉर्न कंपनियाँ उभरीं।

चंद्रमा-3 की चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सफल लैंडिंग ने भारत की तकनीकी क्षमता को और मजबूत किया। लेकिन इस आर्थिक प्रगति का एक महत्वपूर्ण पहलू वित्तीय समावेशन है, जिसने भारत की अर्थव्यवस्था को औद्योगिक और समावेशी बनाने में बड़ी भूमिका निभाई। वित्तीय समावेशन का सफर 2005-06 में शुरू हुआ, जब रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने इसे राष्ट्रीय प्राथमिकता बनाया। 2014 में शुरू हुई प्रधानमंत्री जन धन योजना (पीएमजेडीवाय) ने इस दिशा में क्रांति ला दी। 2025 तक, 50 करोड़ से अधिक बैंक खाते खोले गए, जिनमें 2 लाख करोड़ रुपये से अधिक जमा हुए। आधार प्रणाली ने 1.3 अरब से अधिक लोगों को डिजिटल पहचान दी, जिससे बैंक खाता खोलना और सरकारी योजनाओं का लाभ उठाना आसान हुआ। यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई) ने डिजिटल भुगतान को आम जन तक पहुंचाया।

2024 में यूपीआई ने 150 बिलियन से अधिक लेनदेन दर्ज किए, जिनका मूल्य 200 लाख करोड़ रुपये से अधिक था। यह भारत को दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती डिजिटल भुगतान अर्थव्यवस्थाओं में से एक बनाता है। मुद्रा योजना ने छोटे और मझोले उद्यमों को 20 लाख करोड़ रुपये से अधिक के ऋण दिए, जिसने सूक्ष्म उद्यमिता को बढ़ावा दिया। प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना और सुरक्षा बीमा योजना ने लाखों लोगों को सस्ती बीमा योजनाओं से जोड़ा। निश्च बैंक की 2021 की ग्लोबल फिनडेक्स रिपोर्ट के अनुसार, भारत में 78% वयस्कों के पास बैंक खाता था, जो 2011 में 35% से कहीं अधिक है। ये उपलब्धियाँ भारत की अर्थव्यवस्था को विकसित बनाने और गरीबी उन्मूलन में योगदान दे रही हैं। हालांकि, आर्थिक प्रगति और वित्तीय समावेशन के दावों में आंकड़ों की बाजीगरी स्पष्ट दिखती है।

भारत की आर्थिक और वित्तीय प्रगति के सामने कई चुनौतियाँ हैं। आय असमानता एक बड़ी समस्या है। गोल्डमैन सैक्स के विश्लेषण के अनुसार, लग्जरी ब्रांड्स की बिक्री सामान्य उपभोक्ता वस्तुओं से तेजी से बढ़ रही है, जो अमीर और गरीब के बीच खाई को दर्शाता है। वित्तीय साक्षरता की कमी भी वित्तीय समावेशन को सीमित करती है। केवल 27% वयस्कों को वित्तीय प्रबंधन की बुनियादी समझ है, जिसके कारण लोग वित्तीय समावेशन में भारत से बेहतर प्रदर्शन किया, जहां 83% वयस्कों के पास मोबाइल मनी खाता है। भारत की विशाल जनसंख्या और भौगोलिक विविधता इसे अलग बनाती है, लेकिन बुनियादी ढांचे और साक्षरता में कमी इसे पीछे रखती है। यद्यपि भविष्य की संभावनाएं भारत के लिए आशाजनक हैं। एसएंडपी ग्लोबल रेटिंग्स के

असमानता भी बनी हुई है। ग्लोबल फ़िन्डेक्स 2021 के अनुसार, पुरुषों की तुलना में महिलाओं के पास बैंक खाता होने की संभावना 10% कम है। साइबर सुरक्षा एक उभरती चुनौती है। 2023 में डिजिटल धोखाधड़ी से 1.2 लाख करोड़ रुपये का नुकसान हुआ। महंगाई भी निम्न और मध्यम आय वर्ग को प्रभावित कर रही है, क्योंकि खाद्य पदार्थों की कीमतों में दोहरे अंकों की वृद्धि ने महंगाई को 4% के लक्ष्य से ऊपर रखा है।

पर्यावरणीय चुनौतियाँ भी भारत की प्रगति को बाधित करती हैं। टिकाऊ विकास लक्ष्यों में भारत 166 देशों में 112वें स्थान पर है। वैश्विक निर्भरता, खास तौर पर चीन से आयात और अमेरिका की विदेश नीति पर निर्भरता, भारत की अर्थिक स्वायत्तता को कमजोर करती है। अन्य देशों के साथ तुलना भारत की स्थिति को और स्पष्ट करती है। अमेरिका, 30.3 ट्रिलियन डॉलर की जीडीपी के साथ, विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। इसकी प्रति व्यक्ति आय भारत से 30 गुना अधिक है, और 95% वयस्कों के पास बैंक खाता है।

अमेरिका की अर्थव्यवस्था सेवा, विनिर्माण और प्रौद्योगिकी पर आधारित है, जबकि भारत कृषि और सेवा क्षेत्र पर निर्भर है। चीन, 19.5 ट्रिलियन डॉलर की जीडीपी के साथ, दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। अलौपी और वीचेट पे ने चीन में 90% वयस्कों को डिजिटल भुगतान से जोड़ा, लेकिन इसका केंद्रीकृत नियंत्रण भारत के लोकतांत्रिक दृष्टिकोण से अलग है। जापान और जर्मनी, क्रमशः 4.4 और 4.9 ट्रिलियन डॉलर की जीडीपी के साथ, भारत के निकटतम प्रतिस्पर्धी हैं। इनकी प्रति व्यक्ति आय 34,000 और 51,432 डॉलर है। केन्या जैसे विकासशील देश ने एम-पेसा के जरिए वित्तीय समावेशन में भारत से बेहतर प्रदर्शन किया, जहां 83% वयस्कों के पास मोबाइल मनी खाता है। भारत की विशाल जनसंख्या और भौगोलिक विविधता इसे अलग बनाती है, लेकिन बुनियादी ढांचे और साक्षरता में कमी इसे पीछे रखती है। यद्यपि भविष्य की संभावनाएं भारत के लिए आशाजनक हैं। एसएंडपी ग्लोबल रेटिंग्स के

अनुसार, भारत 2030 तक तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन सकता है, और हर डेढ़ साल में 1 ट्रिलियन डॉलर जीडीपी में

सिक्व बैंक का सुझाव है कि कपड़ा, इलेक्ट्रॉनिक्स और हरित प्रौद्योगिकी में निर्यात बढ़ाकर भारत 2030 तक 1 ट्रिलियन डॉलर के निर्यात लक्ष्य को हासिल कर सकता है। वित्तीय समावेशन में, डिजिटल बुनियादी ढांचे में निवेश और ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट की पहुंच बढ़ाकर 2030 तक 80% ग्रामीण आबादी को डिजिटल भुगतान से जोड़ा जा सकता है। वित्तीय साक्षरता को स्कूलों और समुदायों में अनिवार्य करना होगा। लैंगिक समानता के लिए विशेष योजनाएं और साइबर सुरक्षा के लिए नई तकनीकें जरूरी हैं। राजकोषीय घाटे को कम करने, सब्सिडी को तर्कसंगत बनाने और व्यापार घाटे को नियंत्रित करने के लिए नीतिगत सुधार आवश्यक हैं। 2047 तक नरे-नरे-जोरो उत्सर्जन का लक्ष्य और हरित ऊर्जा में निवेश भारत को पर्यावरणीय स्थिरता में अग्रणी बना सकता है।

निष्कर्ष:-भारत का विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने और वित्तीय समावेशन का सफर प्रभावशाली है। मेक इन इंडिया, जन धन योजना, आधार और यूपीआई ने भारत को वैश्विक मंच पर स्थापित किया, लेकिन आंकड़ों की बाजीगरी, जैसे पीपीपी और निष्क्रिय खातों की समस्या, और बेरोजगारी, आय असमानता और पर्यावरणीय चुनौतियाँ इस चमक को फीका करती हैं। अन्य देशों की तुलना में भारत ने कम समय में बड़ी प्रगति की, लेकिन बुनियादी ढांचे और साक्षरता में सुधार जरूरी है। निर्यात विविधीकरण, डिजिटल और हरित प्रौद्योगिकी, और शिक्षा में निवेश भारत को 2030 तक तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था और वित्तीय समावेशन में वैश्विक नेता बना सकता है। सही नीतियों और सुधारों के साथ, भारत अपनी आर्थिक और सामाजिक कहानी को पूरी हकीकत में बदल सकता है।

–राजेन्द्र मोहन शर्मा, वरिष्ठ साहित्यकार, शिक्षाविद और चिन्तक

एनजीटी ने चिड़ियाघर संरक्षण के लिए मुख्य सचिव सहित पांच को नोटिस दिया

- कोटा चिड़ियाघर में प्रस्तावित खेल परिसर के विकास के लिए पेड़ों की कटाई का मामला
- 105 साल पुराने पेड़ों और हॉर्नबिल बुलबुल जैसी लुप्त पक्षी प्रजातियों का घरे है चिड़ियाघर

आदेश दिए। याचिकाकर्ता बाबूलाल जाजू ने याचिका में बताया कि कोटा चिड़ियाघर की स्थापना 1905 में कोटा के महाराजा ने की थी और यह हाड़ौती क्षेत्र का एकमात्र चिड़ियाघर है एवं वन विभाग 1954 से इसका संचालन कर रहा है। जाजू ने आरोप लगाया है कि कोटा विकास प्राधिकरण

घर है, जो हॉर्नबिल, बुलबुल, सनबर्ड, प्रिनिया, विवेर, एप्रैट जैसी कई लुप्तप्रायः/संरक्षित पक्षी प्रजातियों का निवास स्थान हैं। पेड़ों की कटाई से पक्षियों का बसेरा उड़ने के साथ ही पर्यावरण को अप्ररणीय क्षति होगी। न्यायमूर्ति शिवकुमार सिंह और डॉ. अफ़रोज अहमद विशेषज्ञ सदस्य की पीठ ने मामले की गंभीरता को देखते हुए नोटिस जारी कर चार सप्ताह के भीतर जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया। साथ ही मामले की रिपोर्ट के लिए प्रधान मुख्य वन संरक्षक, आयुक्त कोटा संग्राम एवं सदस्य सचिव राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के

एक-एक प्रतिनिधि की संयुक्त समिति गठित कर साइट का दौरा कर छह सप्ताह के भीतर तथ्यात्मक और कार्रवाई रिपोर्ट प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। एनजीटी ने मामले में राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को प्रमुख पक्षकार मानते हुए प्रतिवादी संख्या 6 के रूप में तत्काल जोड़ने के भी निर्देश दिए। मामले में अगली सुनवाई 26 अगस्त 2025 को होगी। उल्लेखनीय है कि जाजू ने प्राचीन चिड़ियाघर का अवलोकन कर पुराने विशालताम्र पेड़ों एवं विलुप्त होते पक्षियों की प्रजातियों के संरक्षण के लिए एनजीटी की शरण ली थी।